RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मनुष्य बनो

दसम्बर 12/75

वा० ६

शरणागति,

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

संरक्षक

दयाल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

नसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-
र करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार
ौर संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य
नाना।

ों और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधा-
प्रचार करना।

नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान
।

या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को
ादक के नाम भेजे जॉय।

लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य
। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी०
हीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां
ताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क
प्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति
ा सकेगी।

ा, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर
ाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ
और पते की तबदीली भी।

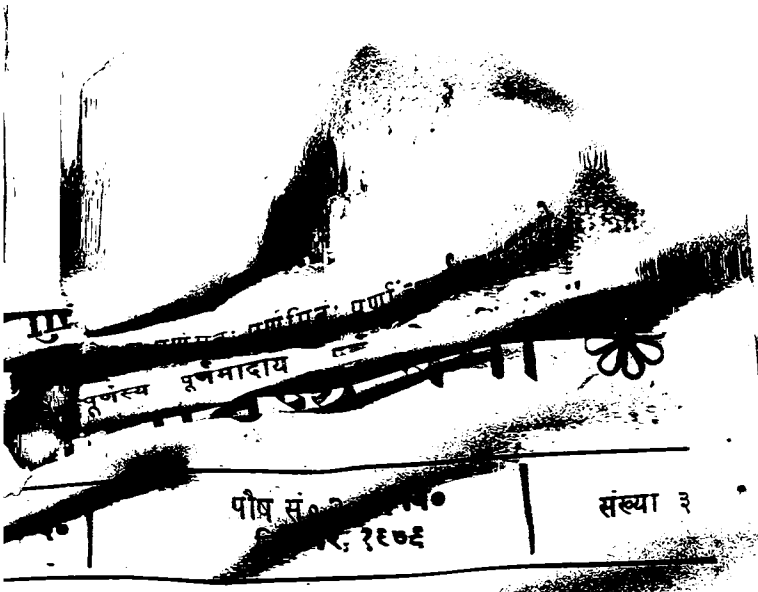

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् ... पूर्णस्य पूर्णमादाय ...

पौष सं० ... [illegible] ...र, १६७६ | संख्या ३

प्रश्नोत्तरी उपदेश

[illegible] क्या सुना है घट में, मुझे [illegible] ।
सोचूँ तेरा कथन है कैसा, गुरु मत है या मन मानी ।।
[illegible] निरंजन की छवि, ज्योति निरंजन ब्रह्म अपार ।
ब्रह्म में परब्रह्म को निरखा, परब्रह्म सोहंगम सार ।।
सोहंग हंस के परे ठिकाना, सतगुरु सत्त पुरुष दरबार ।
यह मैंने देखा प्यारे, देख देख कर किया विचार ।।
घट में सुना शब्द को अद्भुत, पहला शब्द महा टनकार ।
इस टनकार के ऊपर बानी, आई कानों में ओंकार ।।
ओंकार पर रारंकारम, ररंकार में सोहंकार ।
सोहंकार बाँसुरी की गति, बीन की धुन थी सत्याकार ।।
यह सब देखा किया परेखा, यह सब कान से सुन पाया ।
अब आगे का भेद बतादे, सतगुरु ने जो है गाया ।।

—०—

]

॥ मनुष्य ... ॥

...या हिन्दू जाति ...

[redacted]

। यह शरीर के चारों ... ब्राह्मण में पाँच शक्तियाँ ...
में तीन, वैश्य में दो, और शूद्र में एक है। चारों भागों का
रीर के लिये आवश्यक है, इनमें से एक भी न हो तो शरीर
अब आपने समझ लिया होगा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
द्र की असलियत क्या है और उनसे क्या क्या अभिप्राय हैं
ति की संख्या। प्रकृति गत नियमों के अनुसार गुण और
के विचार से वर्णाश्रम की नींव रक्खी गई थी इसमें कहीं
नुचित भेद भाव का स्थान नहीं था, परन्तु समय के उलट
ौर अज्ञान के कारण कुछ का कुछ बन गया, वर्ण बिगड़
ा बन गई और क्षत्री सजातियों के झगड़ों बखेड़ों ने आज
में लाखों फिर्के उत्पन्न कर दिए, जो एक दूसरे को घृणा की
देखते हैं और एक दूसरे के हाथ का छुआ हुआ पानी तक
ैयार नहीं आपने कदाचित सुना होगा—'दस कनौजिया
ूल्हे' कन्नौजिया पूर्व में एक ब्राह्मण शाखा का नाम है जो
र्त लेते हैं परन्तु परस्पर द्वेष का यह हाल है कि प्रत्येक
ने आपको दूसरे से श्रेष्ट समझती है और उच्च कुल बाला
के लेने के नीचे कुल की कन्या से विवाह तक नहीं करता
ल नहीं करते तो आज कनौजिया ब्राह्मण के घरों में

ड़ों कुमारी कन्यायें बैठी हुई हैं। माता पिता निर्धनता के उनका वाह न कर सके। खत्रियों के ढाई घर पाँच घर बचनजाही आदि झगड़े कम दुखदाई नहीं हैं। इनमें कितने ही खत्री ऐसे मिलेंगे कि नका विवाह नही हुआ। अग्रवाल बनिया यदि निर्धन है तो ईश्वर कुशल करे। कायस्थ अपने आपको चित्र गुप्त की सन्तान बताते परन्तु एक दूसरे के साथ वह विवाह करना तो एक ओर खान-न से भी घृणा करते हैं जाति के योधा राजपूतों की कुछ न पूछो न कहे भली !

कोई कहां तक वर्णन करे यदि विचार से देखा जाय तो हिन्दू ाति के बैर विरोध ने उनको अपने पद से इस प्रकार गिरा दिया है क यदि प्राचीन ऋषि आकर इनको देखने तो आश्चर्य में रह जाते।

जब वर्ण बिगड़ गए तो चारों भागों में दोष आना आवश्यक ा, मनुजी महाराज ने मनुष्य के आयु को चारों भागों में बिभक्त र रक्खा है। ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वाणप्रस्थ और सन्यास। यह वि ा-न यों ही नहीं हैं, वरंच इसकी नींव भी प्रकृति गत नियमों के अनु-ूल है। और जो लोग इस पर विचार करेंगे उनको सहज में पता ग जायगा कि संसार की अन्य जातियों और हिन्दू जाति में किस ात का अन्तर है।

आयु को चार भागों में विभक्त करने का उद्देश्य यह है कि उसके काम काज विधि पूर्वक होते रहें। जाति के प्रवन्ध में विघ्न न पड़े। और प्रत्येक मनुष्य जीवन के मुख्य उद्देश्य से लाभ उठाता चला जाय।

जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ? षटदर्शनों ने स्पष्ट बताया है कि सुखकी प्राप्ति और दुःख की निवृति जीवन का उद्देश्य है। इसको इसकी सिद्धि के चार मार्ग अर्थात कर्म-योग, राज योग, भक्ति योग और ज्ञान योग हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि यह नाम एक दूसरे

।। मनुष्य बनो ।।

क पृथक हैं और उनके साधन विधि में भी भेद है, परन्तु में सब एक ही स्थान पर पहुंचाने का यज्ञ करते है। इसमें एक और भी बिचारणीय है कि चारों साधन यद्यपि पृथक पृथक ाते हैं परन्तु आपस में कुछ इस प्रकार मिले हुए हैं कि कभी की एक साथ आवश्यकता पड़ जाती है। प्रत्येक प्रकार का काज करना यदि उनमें ममत्व न हो कर्मयोग है। इन्द्रियों को करना मन को स्थिर करना राजयोग है। ईश्वर प्रेम को हृदय न देना भक्ति योग है। सत्यासत्य का निर्णय करके असलियत र होना ज्ञान योग है। राजयोग की पूर्त्ति के लिये कर्म ईश्वर की भक्ति करना, सत्या सत्य का विवेक रखना आव- । ज्ञान योग वाला भी किसी न किसी बात में त्याग और लिए विवश है। सलिये तुम देखो कि यह चारों मार्ग कहने चाहे पृथक हों परन्तु फिर भी परस्पर मिले जुले हैं। ामें कर्म सबमें आवश्यक और सब की जड़ है। इस सृष्टि की कर्म पर निर्भर है। कौन है जो कर्म नहीं करता कर्म करना लिये आवश्यक है। बुद्धिमानों ने इसको बाँट दिया है, जिससे बूझने में कठिनाई न हो। इसमें से कर्मयोग विशेष कर शूद्र है। राज-योग केवल क्षत्रिय के लिए, भक्ति योग केवल वैश्य , ज्ञान योग केवल ब्राह्मण के लिये है, परन्तु कौन कह सकता ान वाले ब्राह्मण को कर्म नहीं करना चाहिये जिसमें जो धक है उसी के विचार से वर्ण नियत किया गया है। वार से जीव के भी चार भाग नियत किए गये हैं। ब्रह्म- द्ध कर्मयोगी है। गृहस्थी भक्ति-योगी, सन्यासी, ज्ञानयोगी, तु यहाँ भी चारों को एक दूसरे से पूर्णतः पृथक कर देना ल और अज्ञानता होगी। ब्रह्मचर्य के समय में कर्म के साथ ानादि को बढ़ाने का अभिप्राय होता है परन्तु उसमें कर्म कता होती है।

(संत से)

प्रवचन

परमदयाल परमसन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानव्रता मन्दिर होशियारपुर २३-६-७९

चल सतगुरु की हाट ज्ञान बुधि लाइये।
कीजे साहब से हेत, परम पद पाइये ॥ १

सतगुरु सब कुछ दीन्ह देत, कछु न रह्यो।
हम ही अभागिन नारि, सुख तज दुख लह्यो ॥ २

गई पिया के महल, पिया सँग ना रची।
हिरदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी ॥ ३

जहवाँ गेल सिलहली, चढ़ो गिरि गिर पड़ूँ।
उठहुं सम्हारि सम्हारि, चरण आगे धरूँ ॥ ४

जो पिया मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है।
अधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है ॥ ५

भला बना संजोग, प्रेम का चोलना।
तन मन अरपो सोस, साहेब हँस बोलना ॥ ६

जो गुरु रूठे होंय, तो तुरत मनाइये।
हुइये दीन अधीन, चूक वकसाइये ॥ ७

जो गुरु होंय दयाल, दया दिल हेारि है।
कोटि करम कट जायँ, पलक छिन फेरि हैं ॥ ८

कहें कबीर समझाय, समुझ हिरदे धरो।
जुगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो ॥ ९

राधा स्वामी—

मैं सदैव कहा करता हूँ कि मैं ये काम क्यों करता हूँ। मैं हिन्दू के घर पैदा हुआ, ब्राह्मण था, राम, कृष्ण, परमेश्वर, देवी देवताओं

मानने वाला था। जैसे मैं कहा करता हूं। मेरी किसमत मुझे दाता
ल शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे
मत या गुरुमत दे दिया। जब इनकी पुस्तकें पढ़ीं, इनमें सबका
त था स्वामीजी ने और कबीर साहब ने वेदान्त को और सब
ाल और माया मत में कहा उन्होंने सब की ऐसी की तैसा
हुई है। सन्तमत को बड़ा कहा जो कुछ है गुरु मत है। क्योंकि
दयाल से मेरा विश्वास टूटा नहीं। उस समय मैंने प्रण किया
अपना अनुभव कह जाऊँगा और दाता ने कहा था चोला
से पहले तालीम (शिक्षा) बदल जाना। तो मैं जो कुछ करता
सी पर मेरा कोई एहसान नहीं है मैं अपना कर्म भोगता हूँ।
मैंने अपने दिल में प्रण किया था जिसका जैसा ख्याल होता
उसका हाल होता है। मैंने प्रण किया था, मैं अपने ही किये
गया। आज मैं कबीर साहब की वानी सुनाता हूँ, कि वह
क्या है गुरु मत क्या कहत है। गुरु क्या करता है, कहाँ
है और गुरु क्यों करना चाहिये ? क्या यह ठीक है कि गुरु
कुछ है, और सब गलत हैं। यह प्रश्न सब मेरे अन्तर में थे,
ो हल होगये। मगर अफसोस कि जिस मंजिल का मैंने
केया था मैं अभी तक वहाँ स्थाई रूप में २॥ घन्टे ठहर
ा, ये सच्ची बात आप को बताता हूँ। क्यों नहीं ठहर
क्योंकि दुनिया के कारोबार साथ में कुछ घर का और कुछ
ख्याल मेरे गले पड़ा हुआ है। मैं इस को ख्याल ही
। और सब से अधिक ख्याल इन सत संगियों का है जो
समझते नहीं है, कोई कहता है मेरे पुत्र नहीं है, कोई
वाह नहीं हुआ, कोई कहता है ये नहीं है, कोई वह नहीं
दुनिया के दुखों को लिए हुए और कोई मेरे पास आता
यां भी आता है तो दुखों की भरी आती है। जो असली

है। उसे सुनता कोई नहीं। मगर खैर ! मेरा कर्म भोग है। कता है, मैंने जो कुछ समझा है, सारा गलत हो। मगर मेरी त साफ है। और मैं जो कुछ कहता हूँ। अपना आजमाया हुआ ा हूँ। कबीर साहब कहते हैं।

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि ला ये।
कीजे साहिब से हेतु, परम पद पाइये।

कबीर साहिब कहते हैं कि सतगुरु ने दुकान लगाई है। वहाँ से ज्ञान और बुद्धि का सौदा ले लो। गुरु इस कारण किया जाता है ज्ञान और बुद्धि मिल जायेगी तब तुम उस ईश्वर से या उस हिब से प्रेम करने के योग्य बनो अगर तुम को पहले ज्ञान और द्ध नहीं मिली लाख तुम राम, ईश्वर, या परमात्मा जपते रहो ा कामयाब नहीं हो सकते। जिस प्रकार इंजन का काम होता है, गर कोई इंजन को फिट करना नहीं जानता तो वो चलाए क्या ? स वास्ते गुरु जरूरी है। ताकि वह तुमको बुद्धि दे ज्ञान दे।

बुद्धि कैसे मिलती है ? ठीक बुद्धि प्राप्त करने के लिये व देने के लए गुरुओं ने क्या किया है एक तो सतसंग, मगर सतसंग में भी द्धि पूरी काबू नहीं आती, इसलिये गायत्री मंत्र दिया है। ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेणियम भर्गो देवस्य धी महीधियो योनः चोदयात्। इस गायत्री मंत्र का अर्थ ये है। कि जाग्रत स्वप्न, षुषुप्ति के परे तुम्हारे अन्तर सूर्य है। उसके दर्शन करो। वह तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक होगा और सन्तों के यहाँ भी यही है। अभ्यास करके ज्योति स्वरूप के दर्शन करो। जब तुम अपने अन्तर में इकट्ठे हो जाओगे और रोशनी यानी प्रकाश के दर्शन करोगे तो तुम्हारा दौरा खून दिमाग में खास खास Cells के बीच में से जावेगा और दबे हुए वो Cells खुल जावेंगे, तो तुम में बुद्धि पैदा होगी। अब बुद्धि कई प्रकार की है। इंजीनियरिंग की बुद्धि, डाक्टरी की बुद्धि, एटम बम बनाने की बुद्धि एक जीवन में सुखी रहने की

: है। जो साधु और महात्मा बताते हैं। मैं अपनी आत्मा से
ा हूँ कि तुमको क्या बुद्धि मिली ? दूसरों को तू क्या बताना
ता है ?

मैं पंथ में आया तो उन्होंने सब से बढ़ कर ये कहा कि अपने
को पहचानो जब तक अपने आप को तुम नहीं जान सकते,
मालिक को भी नहीं जान सकते, इसी वास्ते गुरु नानक साहब
हा है—

कहे नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भरम की काई।

स्वामी जी ने कहा है—

आप आप को आप पहचानो, कहा और का नेक न मानो।

ो आदमी अपने आपको नहीं पहचान सकता, वह ईश्वर परमे-
को भी नहीं याद कर सकता, जवानी बेशक शब्द गाकर
। वह बुद्धि क्या है जो मुझको मिली, वह बुद्धि यह मिली कि
न हूं।

ाहरा हम और तुम जितने आदमी हैं। सब मां के पेट से
ं। हम और तुम सब आए तो आसमान से उतर कर है।
माँ के पेट के रास्ते से निकल कर आये हैं। कहो आये हैं दा
ाये हैं। माँ के पेट में बाप के वीर्य का एक कीड़ा था जो
रहम के अन्दर गया और जो माँ ने खुराक खाई उससे वह
आ। तो प्रकट रूप में हम एक शुक्राणु (Supermatoze
is) सा कीड़ा थे। जो खुराक खा खा कर पलता पलता अब
ं ५ या ६ फुट के जवान हो गये। या कोई प्रधान मंत्री बन
ोई कुछ बन गया, कोई कुछ बन गया। अब अगर तुम सच्ची
प्त करना चाहो, और ये देखना चाहो। कि तुम कौन हो,
पहले क्या थे ? तो पहले अपने आपको उलट कर देह को
के सारे विचारों को और मन के विचारों को भूल कर
प समाधि या दसवे द्वार में उस कीड़े की हालत में ले जाओ

नी पहले उस हालत में आओ जहां तुमको ज्ञान इन्द्रियों और कर्म न्द्रियों का ख्याल न आने पाये। इसी वास्ते सन्तों ने हमको ये ाम का साधन दिया है। अगर हम ऐसा करना चाहें तो। दूसरी द्धि मुझे यह प्राप्त हुई। कि वीर्य ही हमारी सारी जीवन की क्ति है चालीस बूंद खून से एक बूंद ओजस बनता है और ालीस बूंद ओजस से एक बूंद बीरज बनता है। जो आदमी अपनी ोटी आयु में हाथरसी करके या लड़कियों के पीछे फिर के या ोटी आयु में शादी होने से नाश करता रहता है वह अपने आप ो कभी जान ही नहीं सकता। तो सब से बड़ी बुद्धि जो मैंने हासिल ी है। वह क्या है कि अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का ालन करो। गलत तरीके से अपने वीर्य को बरबाद मत करो, केवल सन्तान के लिये उसको प्रयोग कर सकते हो। इस बुद्धि से मुझे बहुत लाभ हुआ, गो जब मेरी भी बुद्धि ठिकाने नहीं थी। तब में भी गिरा था। हालाँकि उस समय मैं दाता दयाल का प्रेमी बना हुआ था। जब में दाता के दरबार में जाता वो कहते बुलाओ उस बावले फकीर को। मैं उस समय समझता था कि जिस तरह हम बच्चों को बुलाते हैं तो मैं खुश हुआ करता था कि मुझे बड़े प्रेम से बुलाते हैं। मगर इतनी आयु के पश्चात आज मैं कहता हूँ कि मैं असलियत में बावला था और बावला होने का कारण तेरह वर्ष की आयु में मेरी शादी का होना था साढ़े सोलह वर्ष की आयु में मैं ग्रहस्थ में फँसा ये है दूसरी बुद्धि जो मुझको मिली। आज शब्द था —

चल सतगुरु की हाट ज्ञान बधि लाइये।
कीजे साहिब से हेत, परमपद पाइये ।।

मैंने गुरू की आज्ञा से और अपनी जमीर को समझ करके क्योंकि अपने आपको सन्त सतगुरु वक्त कह करके संसार में प्रगट किया है और बड़े एलान से कहता हूँ शपथ पूर्वक घोषणा की है

कताबों में लिखता हूं। क्योंकि सतगुरु कोई खुदा नहीं है। ान का सच्चे अनुभव का नाम सतगुरु है। इस समय के अनु- ो शिक्षा है वह देता हूँ तो मेरी क्या ड्यूटी है ? आप लोगों बुद्धि बताना ज्ञान देना, जब तक तुमको बुद्धि और ज्ञान का हीं है और तुम आमिल नहीं हो, लाख तुम कोशिश करो कि ा आमिल या अपने आद घर तक पहुंच जाओगे नहीं पहुंच यह बिलकुल लाख रुपया की बात है। तो वह बुद्धि मुझे ली ? आदमी के मन के अन्दर बडी ताकत है। अगर उसको र लिया जावे इस मन को ठीक करने की कोशिश करो। ये व रहेगा ? जब तुम्हारा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य हेगा। तुम्हारा अशान्ति का सब से पहला कारण जो मेरे धिक अशान्ति आते हैं। वह यह होता है कि उनका मानसिक ारीरिक ब्रह्मचर्य गिरा हुआ होता है। मेरे पास रोज चिट्ठियाँ । दूसरा कारण उनको रुपये पैसे की कठिनाई होती है। तो ा बुद्धि समझो गुरु के दरबार में जाकर अपना मानसिक और क ब्रह्मचर्य रखो। दूसरे हम दुनिया में रहते हैं। तुम देखो ल धान पशु और पक्षियों को विशेष प्रकार की नसलें विज्ञान की जारही है मगर ये कहीं नहीं कोई सोचता कि हम सन्तान को कैसे पैदा करें। हमारी सब की सन्तान जो है, ी है। अर्थात बिन जरूरत पैदा हुई है। क्योंकि सन्तान के ो आदमी भूल जाता है। हम लोग ये समझते हैं कि औरतें ग साधन है और शायद औरतें भी समझती हों कि आदमी षय का साधन है। ये उनको पता होगा क्योंकि मैं औरत हीं, जो औरत के जजबात रखूं। आदमी के जजबात मैं हूं। जब इन्सान अपने विषय के लिये शराब पीकर या खयाल लेकर स्त्री पुरुष भोग करते हैं। तो जो सन्तान ो वो बिना बुलाये होगी। आप कभी आशा न रखो कि वह

तान तुम्हारे लाभ के लिये काम करेगी। कभी नहीं करेगी, क ी
ों करेगी, उसमें कोई न कोई नुक्स (खराबी) होगी, तुम्हारे हमारे
न हैं क्या कोई मुझे बताओ तो सही सुखी है कोई सन्तान से, कोई
ग्यवान आदमी ही है जो सुखी है। व ना किसी को कोई शिका-
त है। किसी को कोई है। हम लोग सन्तान को सन्तान के ख्याल
पैदा नहीं करते। खुदरो सन्तान पैदा होती है। माँ बाप भी पीछे
दुखी होते हैं। और आप हम भी दुखी होते हैं। तो जिस चीज
। बीज और बुनियाद खराब है। मकान की बुनियाद ही कमजोर
। तो मकान बनाओगे तो क्या होगा। बन नहीं सकता, यह एक
ान और बुद्धि है जो मैंने सीखा है। आज कल की सन्तान देख लो
तने हैं ये अपने काबू में नहीं हैं अपनी मर्जी करते हैं। उनका क्या
सूर है, माँ बाप ने जैसा बनाया बन गए, कसूरवार कौन है। तुम,
गर किसी का लड़का खराब है, गलती खाता है तो मैं तो उसके
ाँ, बाप को कसूरवार कहूँगा, कि तुम जिम्मेवार हो। क्योंकि मैंने
ाजमा के देखा है। मैंने नियमानुसार एक लड़का पैदा किया।
ुदरो सन्तान मैंने भी पैदा की मैं भी इससे बरी नहीं, मगर उस
क्त मुझे पता नहीं था परन्तु मालिक ने मुझ पर दया की कि जो
ुदरो सन्तान पैदा हुई वह मर गई मालिक का शुक्र है जो लड़का
नयम के अनुसार मैंने पैदा किया आप हैरान होंगे, वह इतना नेक
। पौने तीन हजार रुपया वेतन लेता है। मेरे साथ बातें करता
आ मेरे सामने आँख से आँख नहीं मिलाता यहां आता है। मेरी
ख्या पर नहीं चढ़ता। मेरा नौकर है, वह अगर रोटी देता है, उसके
झूठे बर्तन उठाना चाहता है। वह कहता है नहीं। आप पिताजी के
ादमी है। आप मेरे झूठे बर्तन नहीं उठा सकते, आप ही उठा कर
न्दर रख देता है। ये मेरे तजुर्बे हैं। मैंने आजमाये हुए हैं। इस-
लिये मैं बार बार कहता हूँ। कि जब तक सन्तान अच्छी पैदा करने
की रीति नहीं आयगी तुम लाख कोशिश करो, कि देश में शाँति या

आजाये ये नहीं हो सकता। देश के बनाने वाली ये मातायें हैं
लीडर बना सकते होते तो गाँधीजी बना जाते। गाँधीजी हमें
य तो दे गये, मगर हमारे जुम्मे ये घिराव हड़तालें और बसें
। आदि, ये हमारे गले में हार डाल गए और हम बेवकूफ ऐसे
कि जो उसका भाव था, उसको नहीं समझते, जहाँ देखो
ड़तालें हैं, जहाँ देखो वहां घेराव है, जहां देखो वहां मुसीबत
रकार की सम्पत्ति की हानि करते हैं। ये साठ करोड़ आद-
का अधिकार की मिलकियत है। वह यह नहीं जानते कि
साठ करोड़ गुणा पाप लगेगा। जाते कहाँ हैं ये प्रकृति का
नेयम है। कोई बच नहीं सकता। सरकार के कानून से सम्भव
बच जाओ, मगर प्रकृति के कानून से नहीं बच सकते, ये बात
है। मैंने जैसा आपको ऊपर बताया। जब तक मुझे ये ज्ञान
ा मेरा मन अभ्यास करता था, मगर छलागें मारता था,
उधर कभी इधर औ' मैं दाता से शिकायत किया करता था।
। मुझे ये ज्ञान हुआ कि अशाँति व बेचैनी का कारण क्या है।
नी औरत की पिछली आयु में २६ साल हम स्त्री और पुरुष
र नहीं रहे। वह जो पहले १२ साल का बसरे बगदाद का
प था। मगर घर आकर जो मैं गिरा, उसने मुझे अशाँति दी।
ज्ञान होने पर फिर मैं बचा, उससे मेरी बुद्धि ठिकाने आगई।
आप लोगों के अनुभव ने मुझे सिखाया और इस तरह मैं बात
झने के योग्य होगया। मगर आज कल क्या है। तुम्हारे बाल
होते हैं और फिर होता क्या है? क्या तुमको सन्तोष आता
तुम बड़े बूढ़े हो, अपनी जीवनी को सोचो, तुम क्या कर रहे
मन नहीं यहाँ तो तनी हो बिगड़ी हुई है। कहाँ पिछला जमाना
मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। आप सुनकर हैरान होंगे कि
जमाने में क्या होता था।

बगदाद से घर आया तो मेरी माँ ने कहा अपनी बिरादरी के

ने फनाँ ताया को मत्था टेक आ, मैं चला गया, दरवाजे पर खड़े गया। अन्दर चान्दर चार बूढ़े बैठे बातें कर रहे थे। पहाड़ों में रों के अन्दर अँगीठी जलाते हैं। एक बूढ़ा जो अँगीठी के पास ठा हुआ था। उसने दूसरे से कहा, अरे भाई तु मुझे तम्बाकू की ली पकड़ा दे। उसने मजाक में कहा क्या तेरइयाँ रहगइयाँ ? ढ़े बूढ़े आपस में मखोल करते हैं। एक बूढ़ा उनमें से पूछता है, भई बता, तू अपनी जिन्दगी में औरत के पास कितनी बार गया है ? सरा बूढ़ा कहता है। मैं सारी जिन्दगी में सात बार गया हूँ। सात ड़के पैदा हुए हैं। ये मैंने कानों से सुना बाहर खड़े हुए। फिर ोसरे से पूछा, तू बता भई, उसने कहा मैं जिन्दगी में चार बार या चार लड़के पदा हुए। दूसरे ने भी इस प्रकार जो गिरावट की हानियाँ सुनाई, कहोगे कि मैं शरम छोड़ गया कहो। मुझे कोई रवाह नहीं। क्योंकि मेरे जुम्मे ड्यूटी है और मेरी अब पिछली ायु है मैं इसलिये बता देता हूँ कि बुद्धि और ज्ञान क्या है। जो ुरु देता है और पिछले समय की शिक्षा क्या थी। जब मुझको ारा ज्ञान होगया, तो मैंने काम अंग को छोड़ दिया मैं समझता हूँ। मैं ये ज्ञान सुनाकर अपनी ड्यूटी पूरी किये जाना चाहता हूं। आप ुनो या न सुनो, अमल करो या न करो आपकी मरजी।

मैंने क्या बुद्धि पाई ? अपने घरों में प्रेम और शाँति रखो, अपने ख्यालात को शुद्ध रखो अपनी नीयत को साफ रखो। किसी का हक खाने की कोशिश मत करो। चालाकियाँ, चार सौ बीस और हेरा फेरी अपने घर वालों के साथ मत करो। अगर करोगे तो तुम बच नहीं सकते। तुम अगर चारसौ वीस करोगे किसी को धोका दोगे किसी से फरेब करोगे किसी के साथ कुछ करोगे नतीजा क्या निकलेगा ? तुम किसी के लिये गढ़ा खोदोगे तुम्हारे लिये कुआँ तैयार है। मैं आपको अपने घर की बात बताता हूं। मैं बगदाद से आया, मेरा एक भतीजा था उसकी जमीन में हमारे दो मकान बने

क मेरा एक मेरे ताये के लड़के का। मैंने पूछा, ये जमीन तो राम की आपको कैसे मिल गई। मेरा भाई था ताये का मुझ से बड़ा था। उसने बड़े घमण्ड से कहा। ये लड़का होगया था। फिजूल खर्च था, वो दस रुपया उधार माँगता को बीस रुपया दे देते। ताकि कर्ज उसके सिर ज्यादा हो या जब कर्जा उस पर अधिक होगया, हमने कहा, भई रुपया गया है। जमीन हमको वै करदे. तुम सोचना मेरी बातको ग्रहस्त हो। जमीनदारो ! तुम कितनी चालाकियाँ करते हो रा फेरी तुम लोग करते हो। तुमको क्या कहूँ हम नहीं अपने घर को बात बता रहा हूं। मेरे मुँह से निकल गया न वहाँ था। मैंने कहा चाचा जी। हम यहां नहीं बसेगे, आपने ये जमीन फरेब से ली है। उस आदमी के साथ आपने की, बजाय इसके कि उसका सुधार करते, उसने तो दस थे, तुमने उसको बीस रुपये दे दिये, वो बीस खर्च कर के आयार को तुमने बिगाड़ दिया और फिर इस लालच के तुमको जमीन मिल जाबे और तुम मकान बनालो। ये को नहीं फलेगा। आज दिन तक मेरा वो मकान खाली मेरा भाई चला गया मैं हुशियारपुर चला गया। इसी प्रकार अपनी ग ज के लिये भाइयों के साथ दुश्मनो करते हैं। मी होती है। बाँटते समय हम हजार चालाकी करते हैं। जब मुसीबत आती है, तब रोते हैं और जो जो करतूतें करते हैं। अपने दिलों से पूछो तो सही ? मुझे कहने की त है। जो कुछ तुमने अपनी जिन्दगी में किया हुआ है। से पूछो। रिश्वत तुमने खाई हुई हैं, चारसौ बीस तुमने तुम राम राम बेशक न जपो। राम राम जपने से, गुरु- कर मन्था ढेकने से, बाबा फकीर का सत्संग क ने से, ाण नहीं होगा। गुरु ने तुमको केवल रास्ता और ठीक

रीका बताना है। कल्याण तुम्हारे अपने अमल से होगा। दुनिया में ख से जीना हो। और अपना भला चाहते हो तो अपनी नीयत को ोक रख के अपने कर्म को ठीक रखो, शुद्ध कमाई खाया करो। जससे तुम्हारा मन शुद्ध रहे। ये बातें हैं बुद्धिकी जो मैं तुमको बता हा हूं। जिस घर में क्लेश होता है। स्त्री पुरुष की नहीं बनती, ास बहू की नहीं बनती, भाई भाई की नहीं बनती, वहाँ सुख नहीं ; वहाँ कोई न कोई मुसीबत आयेगी, हमारी पहाड़ की कहावत है।

जिस घर कलह कलन्तर वसे,
उस बर घड़ियों पानी नसे।

जिस घर कलह कलन्तर होती है, उसके घड़े का पानी भी चला जाता है। जिस घर में, जिस देश में बड़ों का अदब नहीं है। वहां कुछ नहीं वो वरबाद हो जावेंगे, हम आप ही एक पत्थर गढ़ कर मूर्ति बना देते हैं। वहीं जाकर नमस्कार करते हैं। आज कल क्या हो रहा है ? आप ही किसी को प्रधान बनाते हैं। प्रधान मंत्री बनाते हैं। फिर आपही उनके पुतले जलाते हैं और स्यापे करते हैं। ये बहुत बुरी बात है। इस समय दुनिया का वातावरण क्या बना हुआ है। घरों के झगड़े मेरे पास रोज चिट्ठियाँ आती हैं। स्त्री पुरुषों से दुखी है, पुरुष स्त्री से दुखी है। भाई भाई से दुखी है। कोई किसी से दुखी है। कोई किसी से दुखी है। इसका नतीजा क्या निकलेगा। विपत्ति, दुख, मुसीबत चाहे वो बीमारी की हालत में हो, या लड़ाई की शकल में हो, हानि होगी। किसी को कहो तू औरत की कमाई खाता है। उसे गुस्सा लगेगा। आज कल लड़के दहेज माँगते हैं। रेडियो दो, टेलीविजन दो, फलानी चीज दो, वो माँगते हैं। क्या वो औरत की कमाई नहीं है। मैं आपको अपनी जिन्दगी का उदाहरण देता हूँ। मैं नौकरी में था, क्योंकि मैं सनातनी था, मेरी इच्छा हुई कि मैं यजुर्वेद टीका पढ़ूं, मैंने माँ से कहा कि माँ दस रुपये दे दे। मैंने यजुर्वेद मँगवाना है। माँ ने कहा, बच्चा ! मेरे पास इस समय

। अगले महीने वेतन मिलेगा ले लेना। मैंने अपने सुसर को पत्र लिखा कि मैंने वेद मँगवाना है। दस रुपया भेज दो, जबा था. मैंने माँ से कहा तू नहीं देती तो मैं अपने सुसर से लूँगा। तुम सोचना मेरी माँ अपना सिर मेरे पैरों पर रख पड़ी। कहती है, बच्चा ससुराल को मत लिखना हमारी ी होगी। ये ले मेरे सुहाग की नथ, अपने सुहाग की नथ देती हूँ। ये ले जो सुनार के पास गिरवी रख दे। दस रुपया जब तनखा आवेगी तब पैसा देकर छुड़ा लेंगे। अब तुम सोचो ा भी था, और आज का क्या समय है? बहुयें दाज या दान ती साँसें उनके साथ लड़ती है कइयों ने उनको तेल डाल कर या। ये मैं तुमको बुद्धि और ज्ञान देना चाहता हूँ। जो मिला है। अगर सतसंग के लिये आये हो तो बुद्धि और ज्ञान और तुम अपने जीवन को सोचो, तुम क्या कर रहे हो। मैं यूटी पूरी किए देता हूँ। तुम सुनो या न सुनो तुम्हारी

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये।
कीजे साहिब से हेत, परम पद पाइये॥

ये दुकान खोली है ताकि सचाई तुमको बता जाऊं। मगर ना। तुम दुकान पर जाते हो जब तक कीमत नहीं दोगे। ोई सौदा नहीं देगा। और तुमको कोई लाभ न होगा। इसी तगुरु की हाट पर जाकर जो कीमत नहीं देते, उनको कुछ ता तुम पूछोगे सतगुरु की हाट के सौदे की कीमत क्या है? ो दुकान पर या सतसंग में जाकर उसकी कीमत ये है। न से पूरी तरह उसको देखते रहो। और उसके बचनों को । ये है असली कीमत। उसके लिये तुमको कुरबानी देनी ो ऐसी कीमत नहीं देता अर्थात ऐसा नहीं करता। वो सी सतगुरु के पास चला जावे। उसे कुछ नहीं

ता । और मानलो तुमने बड़े ध्यान से बात सुन भी ली । खोपड़ी
ठ भी गई, जिस प्रकार तुम बाजार में जाते हो, सब्जी और
। ले आते हो । मगर अगर उस सौदे को लेकर के घर में पका-
नहीं, सब्जी बनाके या रोटियाँ पकाके खाओ नहीं । बल्कि उसे
छोड़ो, प्रयोग न करो, तो तुमको उस सौदे के लाने का कोई
। नहीं होगा । ऐसे ही सतसंग में जाते हो, बात को समझते हो,
कुछ गुरु कामिल कहता है उसको ध्यान से सुनते और गुनते हो ।
र अगर तुम अमल नहीं करोगे तो कोई लाभ नहीं, सोच देखो
पास कई आदमी आते है । मेरी बातें सुनकर चक्कर खाते हैं
ाते भी हैं, मगर जो कुछ समझते हैं । उस पर ठहरते नहीं । कई
: मैं सोचता हूं क्या उनका कसूर है । नहीं ।

जिस पर दया आदि कर्ता की, वह यह न्यामत पाये ।

मगर हमारा फर्ज है, कोशश करना, हिम्मत करना और अमल
ना ।

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
कीजे साहिब से हेत, परम पद पाइये ।।

अब रह गया प्रभू से हेत, अभी तक तो था प्रवृत्ति मार्ग, यानी
यां की बुद्धि और ज्ञान आपको बताता है । अब निवृति मार्ग की
फ आता हूं । अपनी आत्मा से पूछता हूँ लोगों को उपदेश करता
। तुमको परमपद मिल गया, और अगर मिल गया तो वो क्या है ?
ो नहीं पता कबीर या राधास्वामी दयाल का परम पद क्या था ।
शायद कोई और हो । जो परम पद मैंने समझा वो आपको बताये
ा हूँ जब से मुझे मन और माया के रूप का पता लगा, और मुझे
ीन होगया कि मेरे अन्दर जो कुछ ख्यालात, विचार भाव और
कलें पैदा होती हैं । ये मेरे अपने मन का चक्कर है । वो सब
लिपत है माया है । हैं नहीं संस्कार हैं, तो मजबूरन स्वाभाविक ही
न को छोड़ गया, मन को छोड़ना क्या है । जो बाबा सावनसिंहजी

ा करतें थे।

ा द्वारे लन्घो, सूरज चाँद सितारे लन्घो ते आगे सतगुरु खलोताए दुनिया ने ये समझा कि आगे बाबा साहनसिंह खड़े हैं। यही भ्रम है। जब मैं मन को छोड़ जाता हूँ। तो आगे है प्रकाश और। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वो और और है। इसको कहते हैं आद अवस्था या सुरत हमने वहाँ ा है और हम वहाँ से आये हैं। कबीर साहब का दूसरा शब्द।

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार ॥टेक
नहीं वहां काया नहीं वहां माया, नहिं वहां निगन पसार।
चार बरन उहवाँ है नारी, ना है कुल व्यवहार ॥
नौ छः चौदह विद्या नाहीं, नहिं वहाँ वेद विचार।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नहीं नेम प्रचार ॥
पाँच तत्त नहिं उत्पति भ लौ, सो परलय के पार।
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नहिं दसों औतार ॥
सोरह संख के आगे हाई, समरथ कर दरबार।
सन्त सिंघासन आसन बैठे, जहाँ शब्द झंकार ॥
कमर रूप कहो वरनो महिमा, तिन गति अपरम्पार।
कोटि भानु की सोभा जिन के, इक इक रोम उजार ॥

इसका तजुर्बा मुझे सारी जिन्दगी में केवल एक बार हुआ। एक हुआ। एक रोशनी के ऐसे समुदर में अभ्यास में चला गया। ा मुझे अन्त न मिला। इस वास्ते मैं कहता हूं कि जो कुछ े लिखा है। वो ठीक लिखा है। क्योंकि मेरे साथ बीती हुई ारह बारह मैंने अभ्यास किया। तो एक दिन जो मैंने अभ्यास तो मैं ऊपर चला गया। इतनी रोशनी थी जिसका कोई हदो- ा नहीं, रोशनी में तैरता रहा। उसका अन्त नहीं मिला वहाँ थी और एक विशेष प्रकार का शब्द था। मैंने जीवन में एक बार देखा अब कंई बार कोशिष करता हूँ। मगर अब

रफ खयाल ही नहीं जाता । क्योंकि मैं अब सतलोक का रहने नहीं रहा । मैं चला गया अनामी धाम की तरफ, अनामी धाम र्य है न चाँद है । न कुछ और कुछ और यही आखिरी मंजिल वहां सतनाम न नाम और न वहाँ अनामी । कबीर साहिब क शब्द मैं कहते है ।

जहाँ पुरुष तहां कछु नाहीं कहें कबीर हम जाना ।
हमरी सैना जो कोई समझे, पावे पद निर्बाना ।।

ो इन सारी बातों से मुझे क्या साबित हुआ, मैं कहाँ पहुंचा ि न हूँ ? एक चेतन का बुलबुला हूँ । इस चेतन के बुलबुले में एक गई है । इस मैंने इन सन्तों का नचाया । इस मैं ने इन साधुओं ौर गृहस्थियों को नचाया । इस मैं ने सारी दुनिया को नचाया ी दया होगई, आप लोगों की दया होगई । उस मैं का रूप ; में आगया । तीन मैं तो मेरी गई । चौथी सुरत की में वो अभी त नहीं हुई बहुत कोशिश करता हूं । फेल हो जाता हूँ । अपने को भूल नहीं सकता । मालिक कौन है । जो हमारे अन्तर रह हर चीज का साथी है । हर वस्तु को देखता है । महसूस करता अन्तर में भी बाहर भी, वो हमारी जात है । मगर हम जो वस्तु हैं । उसमें फँस जाते हैं । मालिक है तो साक्षी, मगर हम उसको ो नहीं समझते, हम उसको अपना मैं पना समझते हैं ।

धर अधर दोनों से न्यारा सोई नाम हमार ।
सार शब्द को ले के आया, मृत्यु लोक मंझार ।।

सार शब्द के दो अर्थ हैं एक सार शब्द अन्दर का एक बाहर की कुल सचाई । जो मैंने समझी और जो मैं आप लोगों के सामने ा हूं । जिस प्रकार एक औरत हर प्रकार अपने आपको खाविन्द वर पती के सुपुर्द कर देती है । ऐसे ही जो कुछ मैंने जीवन में ा, अमल किया, बिलकुल छुपाये नहीं, आपके सामने, जिस तेरह त ने अपने पती के हवाले कर दिया इसी प्रकार जो कुछ मैंने

ा सतसंगियों के हवाले कर दिया। आप मानें या न मानें मैं
ा ठेकेदार नहीं हूँ। मेरे सिर पर तो गुरु का करजा है। जिससे
रने के लिये मजबूर हूँ।

चार गुरु मिल थापल हो, जग के हैं कढ़ीहार।

कबीर साहब कहते हैं चार गुरु तुमको जगत से इस दुनियाँ से
करेंगे, सनातन में चार गुरु ये।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु महेश्वरा।
गुरु साक्षात पारब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवेनमः॥

ा चार होगय, सिखों में आद गुरुवेनमः, जगाद गुरुबेनमः सत-
ामः श्री गुरुवेनमः। सिख जो मरजी इसका अर्थ निकालें, मैं
तजुर्वे के अनुसार इसका अर्थ करता हूँ। वो गुरु क्या है? देह
ात की पूरी जानकारी, मन के हालात की पूरी ज नकारी
ा के हालात की पूरी जानकारी, और सुरत के रूप का यानी
रूप का ज्ञान ये चार गुरु हैं। गुरु नाम ज्ञान का है। समझना
ह क्या है, मन क्या है, आत्मा क्या है, और हम क्या हैं? तो
ाप लोगों से पता लग गया कि मैं कौन हूं, मैं कौन हूं; मैं एक
का बुलबुला हूं। क्यों कहता हूँ? अगर मैं कहदूँ कि मैं अनामी
ाल हूँ, राधास्वामी हूँ, या प म तत्व हूँ, तो क्या मैं कुछ कर
हूँ? ये बड़े बड़े कहलाने वाले जो हैं। अपनी बीमारी दूर न
के, तुम्हारी कहां से दूर करेंगे। कितने ही सन्तों की सन्तान
क निकली, इनकी अपनी औरतों के साथ नहीं बनी, इस वास्ते
ता हूँ कि ऐ इंसान तू इस भरोसे मत रह कि तूने फकीरचन्द
किसी बड़े गुरु से नाम लिया हुआ है। बल्कि अपने अमल को
रो। अपनी करनी ठीक करो और रहनी को ठीक करो।
शान्ति रखो और सच्चे बनो, दुनियाँ को हमेशा समझो कि
मको सदा नहीं रहना, कोई दस साल जिया कोई बीस साल
कोई पचास साल। एक दिन चले जाना है। मगर हमने तो

ये समझा हुआ है कि यहाँ हमने हमेशा ही रहना है।

उनकी बइयाँ पकड़ रहे हो, हंसा उतरो पार।

दुनियाँ में चार गुरुओं का मैंने अलग अलग बयान कर दिया। ज्ञान क्या है, बुद्धि क्या है? तुम कैसे पार उतरोगे। या पार हो सकते हो? जब तक किसी को ये पूरा यकीन नहीं है कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है। ये माया है। उसने लाख शब्द अभ्यास किया हो। उसका आवागमन नहीं जावेगा शास्त्र भी यही कहते हैं। जब तक किसी का किसी से मोह है। उसका आवागमन नहीं जावेगा। इस वास्ते जो किसी गुरु का ध्यान करता मरेगा, वह दूसरे जन्म में आवेगा, उसका जन्म अच्छा होगा ये ठीक है। मगर उसको आना जरूर पड़ेगा। क्योंकि वह मन के चक्कर से नहीं निकलेगा। दुनिया में कोई सचाई ब्यान नहीं करता। सब मजहब वाले गद्दियों वाले अपनी तरफ लोगों को खींचते हैं। मैं नहीं खींचता आपको अपनी तरफ। मैं आपको आपकी तरफ धक्का देता हूँ। अपने आपको संभालो। गुरू ने तुमको ज्ञान देना है। समझ देनी है। विवेक देना है। और अगर तुम ये चाहो कि किसी गुरु ने तुमको फूँक मारनी है। ये झूठी बात है।

जम्बूदीप के तुम सब हंसा, गह्यो शब्द हमार।
दास कबीरा अब के देहन, निरगुन के टकसार॥

ये एशिया हमारा सारा जम्बूदीप कहलाता है। कबीर साहब गुस्से में आकर कहते हैं कि ए जम्बूदीप के आदमियो मेरी बात को समझो और मैं कहता हूं ए हुकूमत वालो ऐ दुनिया वालो, तुम जो भावों के कारण लड़ लड़ कर मर रहे हो। क्योंकि प्रत्येक आदमी अपनी कुर्सी के लिये झगड़ा करता है। और एक दूसरे इसकी वजह से नफरत, बुगज, हसद और कीना बढ़ रहा है। ये तुम्हारे और देश के लिये मुसीबत और तकलीफ लाएगा, इसलिये आप लोग जो सत-

हैं। आपको में भाई के रूप में कहे देता हूँ। मैं गुरु कोई
जिम्मे एक ड्यूटी थी, मैंने पूरी करदी, पता नहीं मैंने
या गलत किया है। अपनी आत्मा को सच्ची रखो।
गरज के लिये किसी के साथ हेरा फेरी धोखा फरेव
भाइयों के साथ मां के साथ, बाप के साथ, गुरू के साथ
के साथ धोखा मत करो मैंने एक ही बात समझी है।
ोई पाप नहीं, कोई पुन्य नहीं। हमको इन मजहब वालों
बालों ने वेवकूफ बना कर लूटा है। मैं सच्ची बात बताता
सी के अन्तर नहीं जाता। न कोई मरते समय लेने जाता
ने मेरे दिमाग को हिलाया है कि मैं सचाई वयान करूँ
क सचाई क्या है। दीवानो कोई किसी को कुछ नहीं
ारा अपना विश्वास, तुम्हारा अपना प्रेम, तुम्हारी श्रद्धा
पहुंचाती है। जो कुछ जिसको मिलता है। उसके अपने
श्रद्धा का, और अपने ही प्रेम का फल मिलता है।
याल में बड़ी ताकत है। इन्सान के मन के अन्दर बड़ी
है। अगर इसको किया जाबे तो ध्यान किया करो मैं
मेरा ध्यान करो। जो भी तुम्हारा इष्ट है। जिस मज-
सका किया करो और जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता
मत समझो बो इन्सान है। उसे पूर्ण मानो। यही एक
कुंजी है अपने आपको उसके सुपुर्द कर दो। ध्यान करो
पुकार करो वो सबको सुनता है। शुद्ध कमाई खाओ।
र मत कमाओ। एक मालिक है। उसका किसी एक रूप
करो और ध्यान करो, सब कुछ मिल जावेगा। मैं तो
ता हूँ। आम दुनिया के लिये भक्ति मार्ग है। एक जगह
विश्वास रखो उसका सहारा लो या रखो।

———

मुक्ति का अधिकार

(गताङ्क से आगे)

लाखों ही मनुष्य कर्म धर्म करते हैं। लाखों ही जप तप ही में जीवन व्यतीत कर देते हैं। कितने पूजा पाठ में रात दिन लगे रहते हैं। तीर्थ व्रत करने वालों का तो ठिकाना ही नहीं है। क्या यह सब के सब मुक्ति के अधिकारी हैं? जी नहीं! आप भूल कर भी ऐसा न सोचियेगा।

क्यों? क्या इनका कर्म निष्फल जायेगा? नहीं कर्म का फल तो अवश्य ही मिलेगा।

यदि कर्म का फल मिलता है तो इनको मुक्ति अवश्य ही मिलनी चाहिये।

परन्तु इसका क्या प्रमाण है कि मुक्ति ही के लिये कर्म धर्म करते हैं।

देखने में तो ऐसा ही प्रतीत होता है। यह लोग अन समझ तो हैं नहीं। इनमें बुद्धि, विचार और समझ बूझ है। इनका काम विवेक के साथ होता है।

नहीं! यह बात नहीं है। इनके अनेक भाव हैं—

(१) यह लोग बड़ाई के लिए कर्म धर्म करते हैं।

(२) इनका काम दिखावे के लिए होता है जिससे जो लोग देखें इनको अच्छा समझें।

(३) लोक लाज के भय से यह डण्ड कमण्डल ग्रहण किये हुए हैं।

(४) इनको अपने इष्ट पर दृढ़ बिश्वास नहीं है।

(५) बहुतों ने धर्म को भी जीवका बना रक्खा है।

(६) बहुत से लोग सैर सपाटे के लिये तीर्थ यात्रा करते हैं।

(७) स्वाभाविक भी नित्य नियम का पालन होता है। इत्यादि इत्यादि।

प भाव से काम करता है उसको वैसा फल मिलता है।
ोग कम हैं, जो मुमुक्ष हों और मुक्ति के लिये काम करते

ष्टान्त दीजिये तव यह बात समझ में आये।
! सुनिये—

(१)—कुम्भ का मेला था। लाखों मनुष्य हरद्वार नहाने
गंगा के तट पर बहुत भीड़-भाड़ थी शिव भगवान
ाथ लेकर कौतुक देखने आये। पार्वती सीधी साधी
भोली भाली स्त्री! शिवजी से कहने लगीं, 'क्या यह सब
हो जायेंगे?' शिव जी बोले, 'कौन ऐसा कहता है?''
कहा, 'यह श्री गंगाजी के भक्त हैं गंगा में स्नान करने
कट जायेंगे और मुक्ति गति को प्राप्त हो जायेंगे।'
ा मुस्कराये—

तीरथ ब्रत कर जग मुआ, ठण्डे पानी नहाय।
सतनाम जाने विना, काल जुगन जुग खाय ॥१॥
तीरथ चाले दो जना, चित चंचल मन चोर।
एक पाप न ऊतरा, लाये दस मन और ॥२॥
न्हाये धोये क्या हुआ! जो मन में मैल समाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ॥३॥
कोटि कोटि तीरथ करैं, कोटि कोटि करैं धाम।
जब लग साध न सेवई, तब लग काँचा काम ॥४॥

ो! इन सब में विश्वास और श्रद्धा नहीं है। कोई
ासी और श्रद्धालू होता है। पार्वतीजी बोलीं, 'जगतपति
नहीं आता कि यह लोग बिना श्रद्धा भाव के यहाँ आये
ी ने उत्तर दिया, 'परीक्षा करलो! मैं मृतक बन जाता
लोगों से कहो कि जिसने कभी पाप न किया हो वह मेरे
ाम संस्कार करे।'

पार्वती जी ने मान लिया और सड़क पर शव (लाश) को रख-कर रोने लगीं। लोगों ने देखा कि एक रूपवती स्त्री अपने बूढ़े पति के लाश को लिए हुए विलाप कर रही है। अनगिनत मनुष्य टूट पड़े और समझाने लगे, 'माई! जो होना था होगया। अब रोना पीटना व्यर्थ है। तू आज्ञा दे तो हम दाह कर्म कर दें।' पार्वतीजी ने कहा, सुनो! मेरे पति को केवल वह मनुष्य हाथ लगाये जिसने कभी पाप कर्म न किया हो।' यह सुनना था कि एक एक करके लोग खिसक गये। भीड़ छट गई। जो लोग देखने आये थे पार्वतीजी का प्रण सुनकर हट जाते थे। थोड़ा सा और दिन रह गया था। वह वैसे ही बैठी रहीं। अन्त में एक नवयुवक उधर आ निकला। उसने कहा, 'माई मुझे आज्ञा दे कि मैं इनका मृतक संस्कार कर दूँ।' माई बोली, 'हाँ बेटे! मैं भी तो यही चाहती हूँ परन्तु मेरा प्रण यह है कि इस शव को केवल वही हाथ लगाये जिसमें पाप न हों।' इसने पूछा, 'बस यही बात है?' पार्वती ने कहा, 'हां!' यह हँसा, 'यह कौनसी कठिन बात है। यह कहकर गंगा की बहती हुई धारा में कूद पड़ा।

गंगे! गंगे! शुद्ध तरंगे! तू अमृत की धारा।
पाप काट अपराध छुड़ावै, खोलै मुक्ति दुआरा॥

वह डुबकी मारकर आया और कहने लगा, 'ले माई! मैं पापी नहीं हूँ! अब मुझे आज्ञा दे कि मैं दाह कर्म दिन डूबने के पहिले ही कर दूँ।' उसी समय शिव भगवान उठ खड़े हुए। दोनों ने उस लड़के के सर पर हाथ रक्खा और आशीर्वाद देकर कहा, 'इन करोड़ों मनुष्यों में एक केवल तू ही ऐसा मनुष्य है जिस को गंगा की पवित्रता पर विश्वास है। तू निस्सन्देह मुक्त जीव है। फिर भोलानाथ पार्वती जी से बोले, 'देखा! लाखों और करोड़ों की भीड़ में एक ही नवयुवक मिला जो बिश्वास वाला और श्रद्धालू है।' पार्वतीजी चुप होगईं।

त (२)—बनारस में स्वामी शङ्कराचार्य का मठ गंगा के ारे पर था और इनके शिष्य इस किनारे पर थे। गंगा थी आपने शिष्यों को पुकारा, 'मेरी धोती दे जाओ।' चेले कने लगे। बढ़ी हुई गंगा में कौन जान दे! एक एक करके कार कर दिया। केवल एक चेला रह गया। उसने गुरु की सर से बांध लिया और साथियों से कहा, 'जब हम गुरु की ा से भवसागर को पार कर जाते हैं तो यह नदी उसके ा वस्तु है? गुरु यदि उचित समझेंगे आप रक्षा करेंगे।' और धम से गंगा में कूद पड़ा। देखते देखते दूसरे किनारे हुंचा! पुस्तकों में लिखा है कि गंगा जी उसके पाँव के तले ति कँवल के पत्ते बिछाती गईं और इसलिए शंकराचार्य ने म पद्मपाद रक्खा। यह तो कथा है परन्तु सच्ची बात यह पादजी गुरु निष्ठ थे।

गुरु समरथ सर पर खड़े, काह कमी तोहि दास।
ऋद्धि सिद्ध सेवा करें, मुक्ति न छाँड़े पास॥
दास दुखी तो मैं दुखी, आदि अन्त तिहुं काल।
पलक एक में प्रगट ह्वै, छिन में करूँ निहाल॥
गुरु को सर पर राखिये, चलिये आज्ञा माँह।
कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाँह॥

ोग दिखावे की भक्ति करते हैं उनको मुक्ति क्या मिलेगी? वैसा फल।

सबै जगत की रीत, प्रीत कछू हरि सों नाहीं।
जिन की मति है भंग, भर्म के संग रहाहीं॥
कहै पाँप इनका संग तज, जिन प्रभु जाना दूर।
मूरख मर्म न जानही, सर्व रहा भरपूर॥

साखी

जब लग सुरत निरत नहिं थीरम, तब लग ना परतीत।
कहै पाँप मैं ताहि न परसूँ, जाके जगत की रीत॥

एक दृष्टान्त तो यह हुआ जिससे पता लगता है कि मुक्ति के धिकारी बहुत ही कम लोग हैं। साधारण मनुष्यों की पूजा पाठ न जाओ वह तो इसी संसार को सब कुछ समझ रहे हैं। इससे लग नहीं होना चाहते इसके दृष्टान्त को भी सुनो।

दृष्टान्त (३)–नारद को एक बार संसारियों की दुर्दशा देखकर या आई। सोचने लगे, 'क्या ही अच्छा होता यदि यह सब बैकुण्ठ । जाते।' घूमते फिरते आप बैकुण्ठ धाम में पहुंचे देखा कि सारा कुण्ठ उजाड़ पड़ा हुआ है। आपने विष्णु भगवान से कहा, 'बड़े ही ाक की बात है कि बैकुण्ठ इस प्रकार सूना पड़ा रहे!' वह बोले, क्या करूँ? कोई यहां आना ही नहीं चाहता।' नारद जी हँसे, ाई न कोई बात अवश्य है।'

'यहाँ तो सुख ही सुख है। दुख का नाम भी नहीं है। यदि संसारी ाव यहाँ आ जाते तो बड़े सुखी होते।' विष्णु भगवान ने कहा, ात कोई भी नहीं है। यहाँ आने की किसी को इच्छा ही नहीं त। मैं भी अकेला हूँ। यदि लोग आजाते तो और नहीं तो, गप-प का आनन्द रहता।' नारदजी बोले, आपकी आज्ञा की देर है। ब सब के बल दौड़ते हुए आवेंगे। उनका यत्न ही बैकुण्ठ के लिये ाता रहता है।' विष्णु ने समझाया, 'वह केवल दिखाने की बात है। ास्तव में कोई भी आना नहीं चाहता। यदि तुम नहीं मानते तो ाओ। स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है। जितने लोग आना चाहें उनको पने साथ लाओ।' नारद मन में बहुत ही प्रसन्न हुए और दौड़ते ए मृत्यु लोक में आये। सब से पहिले एक बूढ़ा ब्राह्मण मिला जिसने

ा चौड़ा तिलक लगा रक्खा और हाथ में सुमिरिनी लिये हुए 'राम'
रहा था। नारद ने सोचा यह धर्मात्मा मनुष्य है और बूढ़ा है,
कहें। उन्होंने उसे प्रणाम करके कहा, 'बाबा ! बैकुण्ठ चलोगे ?'
खड़ा हुआ और क्रोध के साथ बोला, 'बैकुण्ठ जाये जिसके न आगे
छे पगहा। मैं क्यों जाऊ ? मेरे तो बेटे, पोते, नाती, नवासे सब
ो मेरी स्त्री जीती है मालिक का दिया हुआ धन द्रव्य माल अस-
छ है जा ! अपनी राह ले। किसी निखट्टू से बात चीत कर।
ात होकर पानी पानी होगये। कुछ दूर आगे जाने पर एक नव-
। उससे पूछा 'क्यो जी ! बैकुण्ठ को चलोगे ? वह बोला, "हमारे
में धरा क्या है ? बैकुण्ठ तो बूढ़ों के लिये है जिनके न पेट में आंत
दाँत हैं। यह उन अपाहिजों के लिये है जिनसे कुछ काम काज
ता और बैठे बैठे माल उड़ाना चाहते हैं। मैं स्वर्ग को दूर ही से
रता हूँ।'

रद को विश्वास होगया कि भगवान सच कहते थे। कुछ दूर चल-
या को देखा जो भक्त जी के नाम से प्रसिद्ध था। सोचा—यदि
तो न सही। यह विष्णु भगवान का प्रेमी है। यह उवश्य
द यही चला चले तब भी हमारी बात तो रह जायेगी। इससे भी
या। वह बोला, 'आहा आप नारद हैं, भगवान के प्रेमी भक्त !
ोजन कर लीजिये।' नारद ने कहा, 'भोजन पीछे करेंगे, पहिले
तो उत्तर दो।' वह बोला, 'भगवान ! बात तो आपने अच्छी
ोला पाव रत्ती। मेरे मन भी लगती है परन्तु लड़का सयाना हो
ान का काम काज सम्भाल ले तब मैं चलूँ। अभी पोता हुआ
व्याह करना है। इन सबसे छुट्टी पाकर तब चलूँगा।' नारद
ा कहने लगे—'एक मनुष्य भी बैकुण्ठ चलने के लिये नहीं मिलता
ो चल कर देखें, वह महा दुखी हैं। सम्भव है यह वहां चलना
' एक सुअर इधर उधर मुँह मार रहा था। उससे पूछा, 'तू
?' वह बोला, पहिले यह तो बताओ कि यहाँ बिष्ठा होती है

नहीं ?' नारद जी ने उत्तर दिया, 'स्वर्ग में विष्ठा का क्या काम !' तब र ने कहा, 'चलो, चलो, अपना काम काज देखो। मुझे ऐसा बैंकुण्ठ नहीं हिये जहां विष्ठा न हो।' नारद की कुछ न पूछिये। ऐसे लज्जित हुए कि : वहाँ ठहर न सके।

अन्त में झक मार कर उसी बनिया भक्त के पास पहुँचे, और सोचा कि चलने के लिये तैयार ही था, समझाने बुझाने से सम्भव है साथ ही चले। उसका लड़का घर का सब काम काज करता था और पोते का विवाह हो चुका था। नारद ने उससे कहा, 'अब तो वैकुण्ठ को चलो।' वह ा, 'जल्दी क्या पड़ी है ? चलना तो आवश्यक है परन्तु घर बार का कुछ न्ध ठीक करलें तब चलेंगे। नारद बेचारे उल्टे पांव फिरे। कई वर्ष पीछे र उसके पास गये। लड़के ने कहा, 'बाप तो मर गये।' नारद ने दिव्य ट से देखा तों वह कुत्ता बन कर द्वार पर बैठा हुआ था। उसके कान में ह कर कहा, 'कहो ! अब भी चलोगे या नहीं ?' कुत्ता बोला, 'लड़का समझ और मूर्ख है। उसे अभी व्यवहार करना नहीं आता। वह घर का रा धन द्रव्य उड़ा देगा। मैं बैठा उसकी देख भाल करता हूँ नहीं तो चोर रा माल असबाब लुट ले जायेंगे।'

नारद ने उसे कितना समझाया परन्तु वह जाने के लिये तैयार नहीं हुआ ा नारद ने जाकर विष्णु भगवान से कहा, 'वास्तव में महाराज ! कोई यहां ना नहीं चाहता। आप सच कहते थे। मैंने वर्षों चक्कर लगाये परन्तु सी ने भी आना स्वीकार नहीं किया।'

यह संसार की दशा है। कोई क्यों किसी से उलझे ! चलने दो सबको नी अपनी राह पर। तुम दुनियाँ के ठेकेदार बनकर किसी से न अटको। ा होना है होने दो।

———

त्याग

ाग का अर्थ यह नहीं है कि घर बार छोड़ बैठे और लंगोटी लगा ली। और कोई त्याग और वैराग्य कहे परन्तु मैं तो इसे कायरपना कहूंगा। ा त्याग करेगा और क्या ग्रहण करेगा ? घर वार स्त्री पुत्र बाल छोड़ने से क्या हुआ ? हाँ यदि मन की बासनाओं का त्याग करो बात है। मन तो जहाँ जाओगे वहीं साथ रहेगा। आप बन्दर की चेगा और तुमको भी तरह तरह के नाच नचायेगा। बाहरी कर्मों का ाग नही है। यह तो भ्रम की बात है। कर्म के संस्कारों के अंकुर ही हैं। इनसे बचकर कहां निकलोगे। हाँ यदि साहस है तो इनको न रहे बाँस न बजे बाँसुरी और जो यों ही काम काज छोड़ बैठे या ज से भाग निकले तो भगोड़ा कब तक भागेगा और भागकर कहाँ कर्म के फल से तो ब्रह्मा भी छुटकारा नहीं दिला सकता। कर्म का ा की तरह पीछे पीछे लगा रहेगा। मनुष्य कुछ चाहता है और होता यों ऐसा होता है ? प्रारब्ध ऐसा कराता है—

आपन चेती होत नहिं प्रभु चेती तत्काल।
वल चाह्यो आकास को, प्रभु पठतो पाताल ॥
अपने मन कुछ और है, दाता के मन और।
ऊधो सों माधव कहँ, झूठी मन की दौर ॥

झूठे त्याग और ग्रहण के झगड़ों में पड़े हो ? इनमें कब तक पड़े छोड़ो इन निकम्मी बातों को। घर में रहो, बाल-बच्चों का साथ दो धीरे मन को सोधते और साधते चलो। यह अच्छा है या जंगल डियों की धूलि फाँकनी अच्छी है ? वह समय गया जब त्यागी और ाछरें उड़ाया करते थे। अब श्रद्धा से देना तो दूर रहा, कोई माँगी नहीं देता। समय के परिवर्तन को भी देखते हो या वही पुराना ाते रहोगे। एक समय था, आया और गया। अब वह आने वाला

है। क्या त्यागी होकर भिखमंगा बनना है ? छी ! छी !! छी !!! राम ! ! !! राम !!! यह कहाँ का साधुपना और त्याग है ? आज कल के ब्रह्म-नेयों की लीला देखो। मुख से तो 'अहं ब्रह्मास्मि' का वाक्या सुनाते रहते और माँगते हैं भिक्षा ! ऐसे भिखमंगे ब्रह्म को दो धक्के दो कि वह रसा-को चला जाये। यह ज्ञान मार्ग को कलंकित करने वाले हैं। न समझ न ज्ञानी बने फिरते हैं विचार सागर क्या पढ़ लिया कि बस ब्रह्मपद को त होगये। तुम बह चाल न चलो। जो कोई झूटे त्याग का गीत गाये से कहो 'बाबा ! स्वयं बातें न बना। तेरी रहनी सहनी और तेरा जीवन वहार बता रहा है कि तू गशी गली ठोकरें खाता फिरता है. क्या हमको वैसा ही बनाना चाहता है ? हम तेरे ज्ञान को नहीं चाहते। यदि ज्ञान यही अर्थ है कि मनुष्य भीख माँगता फिरे तो तू अपना ज्ञान अपने स रख।'

कौड़ी कौड़ी माया बटोरे, बने हैं कैसे ज्ञानी।
ज्ञान पंथ की खबर न पाई, देखो यह नादानी ॥

भला यह कौन ज्ञान है ?

सच्चा त्यागी वह है जिसे सब कुछ प्राप्त हो और वह उसकी ओर ध्यान क न दे। संसार में रहना परन्तु संसार का होकर न रहना त्याग है। ऐसे नुष्य को लंगोटी लगाने की क्या आवश्यकता है ?

दृष्टान्त १—नासिर-उद्दीन दिल्ली का बादशाह गुलामों के खानदान में से ा। वह बड़ा ही भक्त, धर्मात्मा और सत्यवादी था। बादशाह होने पर भी ज़ाना से एक पैसा अपने लिये नहीं लेता था। शाही कपड़े भी केवल उसी मय पहिनता था जब कि राज सिंहासन पर बैठता था। और समय वह सादे पड़ों से काम लेता था। खाने पीने के लिये खर्च की यह दशा थी कि छुट्टी के समय कुरान लिखा करता था। और जब किताव पूरी हो जाती थी तब ाजार में विकवा दिया करता था। जो कुछ मिलता था उसी से अपने खाने

र पहिन ने ओढ़ने का प्रबन्ध करता था। उसने हुक्म दे रक्खा था
ाब बेचते समय किसी को कानों-कान पता न लगने पाये कि यह
की लिखी है! वह बहुत हीं अच्छा लिखता था इसलिये किताव
थ विक जाती थी। रोटी तक पकाने के लिये कोई बाँदी या लौंडी
। इसकीं बेगम आप ही घर का सारा काम काज करती थी। यह
ही सीधी सादी और पवित्रात्मा थी। दोनों ही किसी का दिल नहीं
। एक वार बादशाह किसी अमीर को अपने हाथ का लिखा हुआ
खा रहा था। अमीर ने एक जगह उसमें गलती बताई। बादशाह ने
को घेर दिया। जब वह चला गया तो उसे दूर करके जैसा था
दिया। एक दरगारी ने पूछा आपने ऐसा क्यों किया?' उसने
या, 'यदि मैं यह कहता कि यह टीक है तो उसे बुरा लगता। मैं
ा कि मैंने अशुद्ध नहीं लिखा है परन्तु उसे घेर देने में मेरी कोई
थी।'

ान्त २—दीर विक्रमादित्य उज्जयन नगरी का राजा अपने समय का
प्रसिद्ध और अद्वितीय महाराजा हुआ है। उस समय सारे संसार में
दूत रहा करते थे। यह इतना पराक्रमी और उपकारी हुआ है कि
म ही 'प्रजा दुख भंजन' होगया था। इतने बड़े महाराजा होने पर
एक छोटा सा घर सपरा नदी के किनारे बनवा रक्खा थ। घर में
अतिरिक्त ओर कुछ भी नहीं था। यह चटाई पर सोता और सपरा
ने हाथ से घड़े में पानी भर लाता था। इसका नाम सच्चा त्याग
ष है। अपाहिजपते को सन्तोष नहीं कहते। इतिहास से पता लगता
ने बहुत से राज्यों को जीत लिया था। इसके राज्य में अनेक प्रकार
थी। यह बड़ा ही गुणग्राही और बिद्या का प्रेमी था। इसके दर-
रत्नों का नाम तुमने सुन रक्खा होगा जिनमें से एक कालीदास
। यह संस्कृत भाषा का अद्वितीय कवि हो गया है। यदि विक्रमा-
ाग का सच्चा अर्थ न समझा होता तो हम में तुम में से आज कोई
भीं न जानता।

सच्चा यज्ञ

साखी

१–दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।
कबीर दया न छोड़िये, जब लग घट में प्रान ॥ १ ॥
२–जहाँ दया तहां आप हैं, जहाँ क्रोध तहाँ साप।
दया बसै जाके हिये, तहां विराजै पाप ॥ २ ॥
३–दया छिमा और दीनता, भक्ति प्रेम का चिन्ह।
कहैं कबीर छिमा बिन, सकल होत हैं खिन्न ॥ ३ ॥

दया करना सच्चा यज्ञ है। इसके अभ्यास से अहंकार की जड़ आपही आप कट जाती है और मन में शुभ भावना उत्पन्न होती है उसका फल बहुत से बहुत और अधिक से अधिक है। दयावान में अभिमान नहीं होता और यह परम अर्थ का सच्चा पात्र बन जाता है।

दृष्टान्त (१)—युधिष्ठिर ने बहुत बड़ा यज्ञ किया। ऋषि मुनि विप्र ब्राह्मण सब उसमें सम्मिलित थे। जिसने जो माँगा वही उसको दान दिया गया। सब लोग यही कहते थे कि आज तक ऐसा यज्ञ किसी ने भी नहीं किया था। अभी यज्ञ समाप्त ही हुआ था और लोग उसकी बड़ाई कर ही रहे थे कि एक नेवला आया जिसका आधा धड़ सोने का होगया था उसने यज्ञशाला की राख में लोट पोट लगाई और फिर उन सबसे कहने लगा, 'कौन कहता है कि यह बड़ा यज्ञ है! तुम इसको यज्ञ कहो परन्तु मैं नहीं कहता।' सब लोग आश्चर्य के साथ एक दूसरे का मुँह देखने लगे। किसी ने पूछा, सच्चा यज्ञ कैसा होता है?' नेवला बोला, 'सुनो! एक ब्राह्मण के घर में चार प्राणी रहते थे—ब्राह्मण उसकी स्त्री, उसका बेटा और

हू। चारों ही धर्मात्मा और दयावान थे। देश में सूखा
रे एक महीने तक उन्हें अन्न नहीं मिला। सबने मिलकर
ाध सेर जौ बोने और उसके सत्तू बनाये। चारों प्राणी
पना भाग लेकर खाने को बैठे। उसी समय उनके यहाँ एक
तिथि आगया। उसने धीमे स्वर में कहा 'आज तीन दिन से
ं मिला। जो कोई मेरी प्राण रक्षा करेगा उसका बड़ा फल
' ब्राह्मण ने कहा, 'मैं गृहस्थी हूँ। यदि अतिथि यों ही चला
तो मैं पतित हो जाऊँगा, इसलिये तुम लोग अपना अपना
ओ। मैं अपना भाग इसको दे दूँगा।' इसने ऐसा ही किया
तिथि की तृप्ति नहीं हुई। तब ब्राह्मणी ने भी अपना भाग
दिया। इससे भी उसका पेट नहीं भरा। तब बेट ने भी
ाग उसे खिलाया। उसे फिर भी अतृप्त देख कर बहू ने
तू श्रद्धा और भक्ति के साथ उसकी थाली में डाल दिया।
र आशीर्वाद देकर चला गया। यह चारों महीने भर से
सब के सब मर गये। कुछ सत्तू पृथ्वी पर गिरा था। मैंने
ह्मण भोजन को सच्चा यज्ञ समझ कर लोट पोट लगाई।
ा धड़ सोने का होगया क्योंकि सत्तू बहुत ही कम रहा था।
र से मैं इस ताक में रहता हूँ कि यदि कहीं और भी सच्चा
ो वहाँ लोट पोट करने से शेष आधा धड़ भी सोने का हो
ने सुना कि महाराजा युधिष्ठिर ने महायज्ञ रचा है। यहाँ
खता हूं तो यह यज्ञ झूठा और दिखावे का निकला जिससे
र करने वाले को साधारण मनुष्यों की दृष्टि में मान बड़ाई
तो मिल गया परन्तु यह सच्चा यज्ञ नहीं है।'
ारे ऋषि मुनि इसकी बात सुनकर दंग रह गये।

—०—

न्त २–ए बनिये ने कई यज्ञ किये थे। सब के दिन एक
हीं रहते। काल भगवान का चक्र बराबर चलता रहता

। यह बेचारा भी निर्धन होगया था। स्त्री ने कहा, 'किसी राजा
; पास जाकर अपने एक यज्ञ का फल बेच दो। रुपया पैसा हाथ
ाजाये जिससे दुख दूर हो।' बनियाँ सोच विचार में पड़ गया परन्तु
त्री के आग्रह करने पर चल खड़ा हुआ चलते समय उसकी घर वाली
। ग्यारह रोटियाँ बनाकर राह में खाने के लिये दीं। वह उन्हें लेकर
ाजा के पास चल निकला। राजधानी दूर थी। राह में उसने एक
ुतिया को देखा जिसने बहुत बच्चे दिये थे बरसात के दिन थे। कई
दन से उसे खाना नहीं मिला था। बनिये को याद आई। एक एक
करके ग्यारह रोटियाँ कुतिया को खिला दीं और आप भूखा राजा के
रबार की ओर चला गया। राजा के जासूस ने राजा से यह घटना
हिले ही सुना रक्खी थी। इसके दरबार में पहुंचते ही राजा ने
कहा, 'मैं सुन चुका हूँ। तू ने राह में बहुत बड़ा यज्ञ किया है!'
मेरे पास इतना रुपया नहीं है। जो उसके फल को मोल ले सकूँ।
हाँ यदि कोई छोटा मोटा यज्ञ होता तो मैं साहस करता।' अन्त में
राजा ने उसे कुछ दे दिला कर बिदा कर दिया और उसके यज्ञ के
फल को मोल लेने का साहस नहीं किया।

—०—

दृष्टान्त ३—कोई मुसलमान फकीर जंगल में से होकर कहीं जा रहा था। जंगल में कोसों कोई झील, तालाव, बावड़ी या नदी नहीं थी। उसने देखा कि कुयें के पास बहुत देर से एक प्यासा कुत्ता पड़ा हुआ हिचकियां ले रहा है। और उसके मरने में कोई कसर नहीं है। फकीर के पास डोल रस्सी नहीं थी। उसके हृदय में दया जो आई उसने अपनी पगड़ी फाड़ कर रस्सी बनाई और टोपी का डोल बनाकर कुए से बड़ी कठिनाई के साथ पानी निकाला और कुत्ते को पिलाया उसकी जान बच गई। वह कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपनी पूँछ हिलाने लगा।

यह सच्चा यज्ञ था।

ान्त ४—किसी ब्राह्मण को ज्ञान की समझ नहीं आती थी। लखना, प्रमाण, युक्ति और शास्त्रार्थ सब कुछ सीखा परन्तु ों होता था। इसे पंडित बनने की लालसा नहीं थी किन्तु ान्कार करना चाहता था। एक दिन वह विचारता आरहा किस तरह कोई अपने में सबको और सब में अपने को देखे ! समझ नहीं आती। राह में एक कुए के पास पहुंचा। कोई ैला चिथड़ा लपेटे हुए चमार सूर्य की प्रचण्ड गर्मी में चलने होकर पड़ा था। इसे दया आई। चमार को अपनी पीठ वृक्ष की छाया में उठा लाया और थोड़ा ठण्डा पानी पिलाया सुध हुई, उसने आँखें खोलीं और प्रसन्न होकर आशीर्वाद उसी समय इसका हृदय खिल उठा और वह आत्मदर्शी ।

भी यज्ञ किया था नहीं तो ऊँची जाति का कौन मनुष्य ो छूने लगा ! इस यज्ञ के पुण्य प्रताप से उसने चमार में मा को देखा जो उसमें थी।

विरछा फलै न आपको, नदी न पीवै नीर।
पर स्वारथ के कारने, सन्तन धरा शरीर ॥

नुष्य श्रद्धा और प्रेम का व्यौहार करता है उसका हृदय भांति खिल जाता है और इसके लिखने से आत्मा आत्मा ात चीत करने लग जाती है। यह एक गुप्त रहस्य है।

शम्भु बसैं कैलाश पर, ब्रह्मा गगन मँझार।
विष्णु क्षीर सागर रहैं, परस्वारथ के लार ॥
पर स्वारथ के काज, शेष महि भार उठावै।
और का करै काम, ध्यान औरहि का लावै ॥
जेते देवी देवता, करैं सकल उपकार।
शम्भु बसैं कैलाश पर, ब्रह्मा गगन मँझार ॥

॥ मनुष्य बनो ॥

बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

काशन का स्थान	:	अलीगढ़
काशन अवधि	:	मासिक
द्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

ांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

र्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,

स्त्री उपयोगी,

ास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी

ाकें तथा 'शाही' और 'मोती'

सलसिले के उपन्यास तथा

दयाल फकीरचन्द जी महाराज

उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें

मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

क खर्च सब का अलग है।

कें रजिस्टर्ड डाक या रेल से

भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

ाव नभव, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक— श्रीमती सुधा मित्तल

व्यवस्थापक व प्रकाशक— श्रीमती सुधा मित्तल

राजनगर

ited by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh